जनविश्वास के कवि: सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

- आकाश शंकर

शोध सार

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना मध्यवर्ग के कवि हैं। मध्यवर्गीय जीवनबोध के प्रति उनकी गहरी निष्ठा है। उन्होंने अपनी कविताओं में भारतीय मध्यवर्गीय जीवन और उसके संघर्ष की विविध छवियों का कोलॉज प्रस्तुत किया है। वे जन्मविश्वासों को बचाने के पक्षधर हैं, इसलिए उन्होंने अपनी कविता में उन मूल्यों और मानकों का तीव्रतर विरोध किया है, जो जनविश्वासों का खंडन करती है। सर्वेश्वर की कविताओं में पूंजीवादी मूल्यों के प्रति नकार का भाव है। इनकी कविता समाज एवं सत्ता-व्यवस्था के अमानवीय ढांचों को चुनौती देती है। उन्हें कवि के दायित्व का बोध है। उन्होंने अपनी कविता में युग-यथार्थ की छवि प्रस्तुत की है।

बीज शब्द : अजनबीपन, यथार्थ, संवेदना, मध्यवर्ग, त्रासदी

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना तीसरे सप्तक के कवि हैं। वे मध्यवर्गीय चेतना के कवि हैं। उनकी कविताएं गंभीर विचारों से युक्त है, जिनमें कृत्रिमता का अभाव है। उनकी कविता में सिर्फ भावुकता ही नहीं ,बल्कि बौद्धिकता भी है। 'काठ की घंटियाँ', 'बाँस का पुल', 'एक सूनी नाव, 'गर्म हवाएँ', 'कुआनों नदी', 'जंगल का दर्द', 'खूँटियों पर टँगे लोग', 'कोई मेरे साथ चले', 'क्या कहकर पुकारूँ' आदि कृतियाँ हिंदी में उनकी प्रसिद्धि का आधार है। सर्वेश्वर का कवि-व्यक्तित्व सांस्कृतिक एवं व्यावहारिक जीवन में व्याप्त मूल्यहीनता, क्षोभ, आक्रोश, असंतोष, प्रतिकार आदि से रचनात्मक प्रेरणा ग्रहण करता है।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात गाँधी जी के नैतिक मूल्य अप्रासंगिक हो चुके थे। गांधीवादी शिक्षा को जन सामान्य ने अस्वीकार करना शुरू कर दिया। नेहरू और उनकी नीतियों से भी मोहभंग हो गया था। नेहरू ने जिस जनतांत्रिक समाजवाद का सुनहरा स्वप्न देखा था, वह भी भंग हो गया था। सोवियत रूस की जो सर्वहारा अधिनायकवादी शासन की संकल्पना थी, उसे भी शंका की दृष्टि से देखा जाने लगा था, अमेरिका के सांस्कृतिक स्वतंत्रता-आन्दोलन का सच सबके सामने आ चुका था। इस परिस्थिति में नये भारत के नव निर्माण का वैचारिक आधार क्या होगा? यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा था। इन सब से हिंदी साहित्य प्रभावित हो रहा था। कविता की वैचारिक भूमि संकीर्ण हो रही थी। विषय की दृष्टि से कविता वैविध्यता का दामन छोड़ चुकी थी। वह कुछ विषयों के इर्द-गिर्द ही घूम रही थी। साहित्य राजनीतिक दलबंदी का माध्यम बनते जा रहा था। साहित्य में जीवन मूल्य विघटित हो रहे थे। इन परिस्थितियों ने सर्वेश्वर के सहृदय चित्त को विचलित कर दिया। उनकी रचना प्रक्रिया में कहीं-कहीं परिस्थितिगत निराशा और अवसाद का दबाव तो

दिखता है, किन्तु वह उससे हताश और निराश नहीं हुए। रचनागत संत्रास, कुंठा, अजनबीपन, निरूद्देश्यता आदि को त्याग कर सर्वेश्वर का कवि व्यक्तित्व सक्रिय बना रहा। सर्वेश्वर ने ग्रामीण जीवन की स्मृतियों एवं संवेदनाओं का रचनात्मक तरीके से उपयोग करके, साहित्य को समृद्ध किया है। उन्होनें रचना को यथार्थ के धरातल से संपृक्त किया। जिन मूल्यों का पोषण और संरक्षण पूंजीपति समाज के द्वारा किया जाता था, उन समस्त मूल्यों का उन्होंने प्रतिकार किया। वे मानते थे कि पूंजीपतियों ने जिन पारम्परिक जीवन मूल्यों को आधार बनाकर शोषण को प्रश्रय दिया है, उसमें ईश्वर भी शामिल है। इसलिए उन्होंने ईश्वर को भी नकार दिया। उनकी इस वृत्ति पर रामचंद्र तिवारी लिखते हैं- "इसलिए नकार दिया कि उसने देखा कि आज की स्वार्थान्धता और विवेकहीन भोगवादी व्यवस्था ने अपनी सारी विकृतियों, अनीतियों एवं अमानवीय व्यापारों को छिपाने के लिए उसे ढाल के रूप में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। 'ईश्वर' का नकार, बहुत बड़े साहस का कार्य था। यह साहस उसी रचनाकार के लिए संभव है जिसे मनुष्य की असीम संभावनाओं पर अखण्ड विश्वास हो।"(1) मनुष्य व मनुष्यता के प्रति अगाध समर्पण के कारण ही उन्होंने व्यवस्था को चुनौती दी। उन्होंने यह महसूस किया कि समाज की क्रूर अमानवीय यांत्रिक व्यवस्था ने मानवीय मूल्यों को संकट में डाल दिया है। सर्वेश्वर अपनी कविता के माध्यम से जनता को अन्याय, अत्याचार एवं शोषण के विविध स्वरूपों से परिचित करवाते हैं। उनकी मान्यता है कि जनता जब शोषण के विविध अवयवों के प्रति सतर्क और सचेत हो जाएगी, तब अपने पूरे शक्ति एवं सामर्थ से क्रांति करेगी।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने अपनी रचना में अपनी आत्म सजगता और वैचारिक स्वतंत्रता को सुरक्षित रखा है। उन्होंने अपनी सक्रियता और सतर्कता के माध्यम से करोड़ों-करोड़ जनता को संगठित करने का प्रयास किया। वे अपनी रचना के माध्यम से एक ऐसे वैचारिक आधार का अन्वेषण करते हैं, जो जनता को संघर्ष के लिए प्रेरित करे। सर्वेश्वर गहरे अर्थों में डॉ० राममनोहर लोहिया के समाजवाद से प्रभावित थे।

सर्वेश्वर वैश्विक स्तर पर मानव समाज को नाना प्रकार के बाह्याडम्बरों से घिरते देखते हैं। वह मानव समाज को इन आडंबरों से मुक्त देखना चाहते हैं। उनके मन में आमूलचूल परिवर्तन की कामना है। परिवर्तन की इस इच्छा को वास्तविकता के धरातल पर अवतरित करना कोई आसान काम नहीं है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कवि को व्यवस्था को आतंरिक एवं बाह्य दोनों स्तरों पर सुदृढ़ करना होगा, तभी विश्व स्तर पर युगांतरकारी परिवर्तन होगा। कवि परिवर्तन का आकांक्षी तो है, किंतु वह परिवर्तन शान्ति पूर्ण होना चाहिए। कवि जब विश्व की तत्कालीन परिस्थितियों का विश्लेषण करता है, तो पाता है कि कुछ राष्ट्र केवल दिखावे के लिए शान्ति की बात करते हैं, किन्तु उनकी मंशा घातक है। वह भीतर ही भीतर युद्ध की तैयारियाँ करते हैं। सर्वेश्वर इनसे विक्षुब्ध हैं। वे क्रांति के पक्षधर हैं। लेकिन उनकी पक्षधरता की अपनी अलग स्वतंत्र दृष्टि है। उन्होंने क्रांति की सफलता का श्रेय यथार्थ को दिया है। बिना यथार्थ के ज्ञान के क्रांति केवल कल्पना एवं

भावुकता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। सर्वेश्वर अपनी कविता में क्रांति की ऐतिहासिक प्रक्रिया एवं भूमिका को रेखांकित करते हैं। परमानंद श्रीवास्तव के अनुसार-"सर्वेश्वर की कविता यह नहीं घोषित करती या यह घोषित करने की उतावली नहीं दिखाती कि 'क्रान्ति हो गयी', पर वह क्रान्ति की ऐतिहासिक प्रक्रिया में अपनी भूमिका जरूर निभाना चाहती है।"(2)

कवि अपनी कविता में मध्यवर्गीय जीवन के कटु यथार्थ को अभिव्यक्ति देता है। सर्वेश्वरजी स्वयं मध्यवर्गीय परिवार से थे। इसलिए उन्होंने इस वर्ग की यथा स्थिति को प्रकृत रूप में चित्रित किया है। वस्तुत: कवि की कविता में जो टीस है, उसका कारण है- आधुनिक सन्दर्भों की विचित्रता एवं अनोखापन। आज की इन त्रासद परिस्थितियों में कवि निष्क्रिय नहीं होता है। वह निरंतर इन विवशताओं से बाहर निकलने की कोशिश करता हैं। कवि के संघर्ष में जनता का संघर्ष अभिव्यक्ति पाता है। यह संघर्ष उन नैतिक वर्जनाओं, सामाजिक रूढ़ियों तथा राजनैतिक वैषम्यताओं से है, जिसने मध्यवर्ग के जीवन को छिन्न-भिन्न कर दिया है। इन त्रासद परिस्थितियों की अभिव्यक्ति के लिए सर्वेश्वर जी ने व्यंग्यात्मकता का सहारा लिया है। उन्होंने अपनी व्यंग्यधर्मिता के माध्यम से समाज, राजनीति और शोषक वर्ग के प्रत्येक रहस्यों को उद्घाटित करके सार्वजनिक कर दिया है। कलई खोलने के मामले में सर्वेश्वर तनिक भी संकोच नहीं करते। और न ही पक्षपात करते हैं। उनके व्यंग्यात्मकता की विशिष्टता को रेखांकित करते हुए, चन्द्रकान्त बांदिवडेकर लिखते हैं-"जब समसामयिक जीवन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। तो व्यंग्यात्मक हो उठता है।.....लेकिन सर्वेश्वर के व्यंग्य का एक विशिष्ट स्तर है, विशिष्ट रूप है। इस व्यंग्य का मूल आधार सामाजिक विज्ञान से गहरी सम्पृक्ति है। कवि में देश और लोग दोनों के प्रति प्रेम है। इन दोनों के बिगड़ते विकृत रूप को देखकर उसकी आत्मा सच्चे दर्द का अनुभव करती है। लेकिन इस दर्द का अब कोई विशेष मूल्य नहीं माना जाता।.....सर्वेश्वर व्यंग्य करते समय प्रायः ऐसे बिम्बों और प्रतीकों में बोलते हैं जो एक ओर उनके रोजमर्रा के साधारण जीवन व्यापार से गहरे सम्पर्क को उजागर करते हुए दूसरी ओर उनकी कवित्व-शक्ति का प्रमाण भी प्रस्तुत करते हैं।"(3) 'पढ़ी-लिखी मुर्गियाँ' नामक कविता में कवि आज के बौद्धिक वर्ग पर तीक्ष्ण व्यंग्य करता है-

"साहस है, आपस में लड़ना है जानती है,
स्वतंत्र दरबे को मात्र कवच मानती ,
गूदा सब उतर गया
दीख रही चियाँ-चियाँ
जिसकी ऊँची कलंगी सब उसके हाथ लगी,
उसकी ही चमक-दमक के हैं अनुराग-रंगी

अंडे कितने देगी

जोड़ रहे बैठ मियाँ,

किड़-किड़-किड़ कियां-कियां।"(4)

गरीबी इस देश का मूलभूत समस्याओं में शामिल हैं। हर राजनीतिक पार्टी गरीबी हटाने की बात करती है, किंतु क्या कारण है कि गरीबी हटती ही नहीं है? इसके समाधान के लिए नाना प्रकार की योजनाएं अलग-अलग सरकार निर्मित करती है, किंतु हर योजना भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती है। 'गरीबी हटाओ' जैसी कविताएँ देश में व्याप्त गरीबी और भ्रष्टाचार की वास्तविक छवि पेश करती हैं। इस सन्दर्भ में सर्वेश्वर जी लिखते हैं कि "आजादी के पच्चीस साल बाद आम आदमी हर तरह से और विपन्न ही हुआ है। हर तरह से वह टूटा है। सबने अपने-अपने मतलब से उसे छला है, सत्ता और राजनैतिक दल सबसे वह ऊब चुका है, उसका विश्वास सब पर से उठ चुका है। मँहगाई, गरीबी उसे तोड़ चुकी है। उसके लिए जिन्दा रहने और आगे बढ़ने का कोई रास्ता नहीं है।"(5) हर राजनीतिक पार्टी या प्रशासन अपने-अपने स्तर पर गरीबी हटाने का प्रयत्न करता है। कवि गरीबी हटाने की प्रक्रिया का एक दृश्य अपनी कविता में चित्रित करते हुए व्यवस्था पर व्यंग्य करता है-

"गरीबी हटाओ सुनते ही

उन्होंने बड़े-बड़े नक्शे बनाए

आँकड़े इकट्ठे किए और उन्हें रहने लगे

नक्शों की

वर्दी पहन

जब ये कतार में खड़े हुए और राष्ट्रीय

ध्वनि बजने लगी

तब उन्होंने कवायद शुरू की

और एक

ही जगह पर पैर पटकने लगे"(6)

सर्वेश्वर की कविताओं में प्रेमानुभूति के उत्कृष्ट रूप विद्यमान है। प्रेम और सौन्दर्य का सूक्ष्म एवं यथार्थमूलक अनुभव ही,उनके कवि मानस को नई ऊर्जा प्रदान करता है। इनकी कविताओं में प्रेम व सौन्दर्य का वायवी रुप नहीं है, बल्कि उसमें यथार्थ की ओर आग्रह है। उनकी कविताओं में रागात्मकता तो है, किंतु वह भावोच्छवसित नहीं है। उनमें एक विशेष प्रकार की आत्मसजगता, नियंत्रण तथा संयम है। रागात्मकता मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। उसके आकर्षण-विकर्षण के मूल में रागात्मकता ही होती है। रागात्मक संबंधों

के निर्माण में भावुकता, आत्मीयता, प्रेम, स्मृति, अल्हड़ता और आकर्षण की स्थितियाँ क्रियान्वित होती है। रागात्मकता जीवन का सत्य है। इससे विमुख नहीं हुआ जा सकता है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना एक ऐसे विलक्षण कवि हैं, जिनके काव्य-संसार में रागात्मक संवेदना को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। 'काठ की घटियाँ', 'बाँस का पुल' और एक सूनी 'नाव' जैसी इनकी आरंभिक कृतियाँ रोमानियत से परिपूर्ण हैं। इनकी कविताओं में जो प्रेम, मस्ती और किशोरकालिक अल्हड़ता के दर्शन होते हैं, वह सब रोमानी है। इनकी परवर्ती रचनाओं में समसामयिक परिवेश का चित्रण है, आवश्यक प्रतिक्रियाएं भी हैं, लेकिन रोमानियत से उनका नाता टूटता नहीं है। सर्वेश्वर की रोमांटिक दृष्टि छायावादी कवियों से सर्वथा भिन्न है। सर्वेश्वर की रोमांटिकता छायावादोत्तर कवि हरिवंश राय बच्चन, नरेन्द्र और अंचल की तरह का है। इनकी आरंभिक कविताओं पर बच्चन का सर्वाधिक प्रभाव दिखाई देता है, जो छायावादी संस्कारों से मुक्त है। कुमार कृष्ण के अनुसार- "सर्वेश्वर की प्रारम्भिक कविताओं का संसार प्रेमानुभूतियों से उपजा रोमानी संसार है जो बहुत से स्थानों पर छायावादी संसार से भिन्न है।"(7)

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने अपनी कविताओं को गीत एवं कथा की भांति सहज सम्प्रेषणीय शिल्पतत्त्व प्रदान करने का प्रयास किया है। उन्होंने जनपक्षधरता को कविकर्म का आन्तरिक अनुशासन माना है। उनकी इसी दृष्टि के अनुरूप ही उनकी कविताओं के वस्तुक्षेत्र का विस्तार हुआ है तथा छन्द की विविधता विद्यमान है। समाज सापेक्ष चिन्तन, यथास्थिति में परिवर्तन की तीव्र इच्छा, वस्तुस्थिति के प्रति सजगता, आम जन की संवेदनाओं से संपृक्ति, जनसामान्य के लिए संघर्ष करने की इच्छा एवं उनके संघर्ष से जुड़ने की इच्छा सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविताओं को जनधर्मी कविता बनाती है। उनके लिए कविदृष्टि, यथार्थदृष्टि का पर्याय है। 'खूंटियों पर टंगे लोग' सर्वेश्वर जी का प्रसिद्ध काव्य संग्रह है। इस संग्रह की अन्तिम दो कविताओं में लू-शुन से संवाद स्थापित करने की कोशिश की गई है। लू-शुन ने अनेक गद्य कविता की रचना की। उनकी गद्य कविताएं विशिष्ट अर्थ संपन्न है। उन्होंने जिन कहानियों की रचना की है, वह भी कविदृष्टि सम्पन्न है। सर्वेश्वर अपनी कविता में एक कथा गढ़ते हैं और अपने संप्रेष्य का संप्रेषण करते हैं। कवि लू-शुन को अपने 'गाँव का संपेरा' दिखाने के लिए निकलता हैं। इसी भ्रमण के बहाने कवि अपने गांव की सामाजिक त्रासदी का चित्रण करता है। वह दिखाता है कि किस प्रकार ग्रामीण कृषक या जन सामान्य को पैदावार के स्रोत से, कर्म के सौन्दर्य से, मूल राग-हेतुओं से अलग करने की कोशिश की जा रही है। इसके पश्चात भी उनकी अदम्य-दुर्दम जिजीविषा शेष है। कवि ने सामन्तवाद और पूँजीवाद के गिरफ्त में फंसीं भारतीय ग्रामीण जनता के शोषण, उत्पीड़न एवं उनके संघर्ष का वर्णन किया है। सर्वेश्वर ने अपने शिल्प-शैली के चमत्कार से कविता में विद्यमान नाटकीय कथात्मकता को काव्यानुशासन के भीतर रख कर, कविता को बृहत्तर अर्थ प्रदान किया है। कवि ऐतिहासिक यथार्थ को कविता का यथार्थ बना दिया है। अपनी संवेदनाओं,

आवेगों को कवि सार्थक रुप कविता में देता है। जिस तीव्रता से सर्वेश्वर वस्तुस्थिति, यथास्थिति और परिस्थिति की गंभीरता को समझते हैं, उसे वह उसी तीव्रता के साथ शब्दबद्ध भी करते हैं। वह कविता में भावना को अधिक महत्त्व देते हैं, ताकि मनुष्य को मनुष्य से, मानवीय मूल्यों से जोड़कर रखा जा सके। उनकी इस विशिष्टता को रेखांकित करते हुए,कुँवर नारायण लिखते हैं-"सर्वेश्वर मूलतः तीव्र आवेगों और उत्तेजनाओं वाले व्यक्ति थे जिसका पूरा असर उनके लेखन और उनके आपसी संबंधों दोनों पर पड़ता था- और कभी-कभी आश्चर्यजनक रूप से लगभग एक ही- सा। बौद्धिकता की बारीकियों और काट-छाँट में वे ज्यादा नहीं पड़ते थे। जिसे तीव्रता से महसूस करते उस पर विश्वास करते और उसे उतनी ही तीव्रता से शब्द देते। यही उनके लेखन की ताक़त थी, और कहीं-कहीं शायद कमज़ोरी भी। कविता में तर्क की अपेक्षा भावना को अधिक महत्त्व देनेवाले सर्वेश्वर के लिए कविता का मतलब था आदमी और आदमी को बाँधने, या बाँध सकनेवाले, मूलभावों और प्रतीतियों का उद्दीपन।"(8)

सर्वेश्वर ने अपनी कविता की भाषा अपने भावों के अनुरूप ही निर्मित की है। उनकी कविता में आंचलिक शब्दों का प्रयोग है। आंचलिक शब्दों का यह प्रयोग कवि की भाषा को नया स्वरूप, रचनात्मक ऊर्जा और ताज़गी देता है। लोक जीवन की अनुभूतियों को सर्वेश्वर ने मुहावरों के माध्यम से अपनी कविता में समेटा है। इन्हीं कारणों ने उनकी भाषा आम जनता की भाषा बन गई है। जनता बहुत आसानी से अपना संबंध उन कविताओं से जोड़ लेती है और यही कवि की अक्षुण्य प्रसिद्धी का आधार है। उनकी भाषा की प्रशंसा करते हुए, चन्द्रकान्त बांदिवडेकर लिखते हैं-" सर्वेश्वर की देहाती सादगी भाषा के प्रयोग में और शब्दों के संचयन में, चित्रों के संकेतों और रंगों में, प्रतीकों व बिम्बों के निर्माण में प्रयुक्त उपादानों में, स्मृतियों के कड़वे मीठे दर्द में, लगाव के आलम्बनों में सर्वत्र झलकती है। जिस सरलता से वे चीजों और स्थितियों के प्रति व्याकुल होते हैं, प्रतिक्रियाएँ करते हैं, उनमें भी यह निपट सादगी परिलक्षित होती है।"(9) छन्द विधान की दृष्टि से सर्वेश्वर की कविता का अनुशीलन करने से स्पष्ट होता है कि उनकी कविता की छंद योजना अन्य नये कवियों की छंद योजना से नितान्त भिन्न है। मुक्त छन्दों की दृष्टि से देखें तो उनकी कविता सारे नये कवियों की कविता की भांति ही हैं, लेकिन जब लोक जीवन की अनुभूतियों के चित्रण की बात आती है, तो उन्होंने तुकान्त या छन्दबद्ध छन्दों का प्रयोग किया है। 'काठ की घंटियाँ' कविता संग्रह छन्द विधान की दृष्टि से नाना प्रकार के छन्दों का एक साथ उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने गीत और लोकगीत विधा में जिन गीतों की रचना की है, वे आधुनिक हिन्दी कविता जगत में अत्यंत लोकप्रिय हैं। उन्होंने अनेक प्रकार के चिन्हों का प्रयोग अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए किया है। कथ्य और शिल्प की दृष्टि से सर्वेश्वर की कविता का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि इनकी कविताएं नयी कविता के इतिहास में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में पूर्ण समर्थ हैं। उन्होंने अपनी कविता में समाज की अनेक विसंगतियों पर

तीक्ष्ण प्रहार किया है, ताकि एक सुन्दर समाज का निर्माण हो सके। सर्वेश्वर की कविता अनुभूति की ईमानदारी, प्रकृति प्रेम, लोक सम्पृक्ति, व्यंग्य और अनोखे व ताजे उपमान, बिम्ब और प्रतीकों के कारण उल्लेखनीय है।

स्पष्ट है कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना को अपने युग यथार्थ की व्यापक समझ थी। वे एक बेहद सजग एवं सतर्क कवि हैं, जो अपनी युग की आवश्यकताओं और अपने दायित्वबोध से परिचित हैं। वे यथास्थितिवाद के सख्त विरोधी हैं। इन्होंने अपनी कविता को क्रोध,घुटन, आत्मपीड़न, पर-पीड़न, सन्त्रास, ऊब और निर्वासन की प्रवृत्तियाँ से दूर रखा। सर्वेश्वर अपनी कविताओं में संघर्ष करते हुए दिखते हैं। संघर्ष के दौरान कवि हारता, लड़खड़ाता, पिटता और चोट खाता हुआ नज़र तो आता है, किंतु कभी भी वह दुखी, आत्मकेन्द्रित, स्वार्थी, और अहंवादी प्रतीत नहीं होता है। कविता के शिल्प को अनावश्यक चमत्कृत करने की प्रवृत्ति से सर्वेश्वर कोशो दूर हैं। वह अपने भावों को सरलता एवं ईमानदारी से पाठकों तक पहुंचाते हैं। इनकी कविताएं अर्थ की दृष्टि से अत्यंत सघन,व्यंजनामूलक, व्यंग्यात्मक,संश्लिष्ट, अनेकार्थी हैं। उनकी कविता अनुभव के नये आयामों, अछूते कोणों एवं दृप्त आवेगों के लिए पढ़ी जायेगी। उनके पास भाषा की विविध भंगिमा एवं कथन की वक्रता प्रचुर मात्रा में है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना अपनी अनुभूति और शिल्प के माध्यम से कविता का एक ऐसा उत्कृष्ट रुप प्रस्तुत किया है, जो आने वाले नई पीढ़ी के कवियों के लिए एक मिसाल है।

संदर्भ -

1. त्रिपाठी, मंजु, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य-संसार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण-2001, पृ-04
2. श्रीवास्तव, परमानंद, शब्द और मनुष्य, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2014, पृ-129
3. बांदिवडेकर, चन्द्रकान्त, कविता की तलाश, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2010, पृ-143-144
4. सक्सेना, सर्वेश्वरदयाल, एक सूनी नाव, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1966, पृ-71
5. अज्ञेय(संपा), तीसरा सप्तक, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, ग्यारहवां संस्करण-2009, वक्तव्य
6. सक्सेना, सर्वेश्वरदयाल, कुआनो नदी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष-2005, पृ-45
7. कृष्ण, कुमार, समकालीन कविता का बीजगणित, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, आवृत्ति संस्करण-2004, पृ-28
8. नारायण, कुंवर, आज और आज से पहले, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण-2015,पृ-208
9. बांदिवडेकर, चन्द्रकान्त, कविता की तलाश में, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2010,पृ-147

शोधार्थी, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, ई-मेल- mrakashshankar@gmail.com

संपर्क सूत्र-9534 64 8742